LOK SABHA

Monday, February 8, 1960/Magha 19, 1881 (Saka)

The Lok Sabha met at Thirty-five minutes past Twelve of the Clock

12.35 hrs.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

MEMBER SWORN

Shri D. C. Mallik (Dhanbad)

PRESIDENT'S ADDRESS

Secretary: I beg to lay on the Table a copy of the President's Address to both Houses of Parliament assembled together on the 8th February, 1960.

President's Address

राष्ट्रपति: संसद् के सदस्यगण,

एक बार फिर संसद् के नये सत्र का भार संभालने के समय मैं आपका स्वागत करता हूं।

२. बीते वर्ष में मेरी सरकार और हमारे लोग पहले से कहीं अधिक राष्ट्र-निर्माण के काम में संलग्न रहे। देहातों और शहरों में रहने वाले हमारे लोग आर्थिक और सामाजिक उन्नति की आवश्यकताओं और सफलताओं को अधिकाधिक समझने लगे हैं और इन्हें अपने दैनिक जीवन के लिये महत्वपूर्ण और अपनी स्थिति और रहन-सहन के स्तर में सुधार के लिये आधारभूत मानते हैं।

३. हमारी परम्परागत और सुपरिचित सीमाओं को लांघ कर, भारतीय गणराज्य की भूमि के कुछ भागों पर चीनी लोगों के घुस आने से हमारे लोगों को भारी दुख हुआ है और उन में ठीक ही व्यापक क्षोभ की भावना फैली है। इनके कारण हमारे साधनों और राष्ट्र निर्माण के प्रयासों पर बहुत भार पड़ा है। हमें इन सीमावर्ती घटनाओं का दुख है और अफसोस भी है। हमारे आपसी सम्बन्धों के निर्धारण के लिये जिन सिद्धांतों को हमने परस्पर स्वीकार किया था चीन द्वारा उनकी अवहेलना के कारण ही ये घटनायें घटी हैं। हमारी सम्पूर्ण सत्ता के लिये पैदा हुए इन खतरों का मुकाबला करने के हेतु मेरी सरकार ने प्रतिरक्षा और राजनयन के क्षेत्रों में सत्वर और सुविचारित कई कदम उठाये हैं।

४. मेरी सरकार को खास तौर से इस बात का अफसोस है कि हमारे पड़ोसी ने हमारी सामान्य सीमा पर, जहां हमारी सेना तैनात नहीं थी, सैनिक बल का एक तरफा प्रयोग किया। यह विश्वासघात है, किन्तु उन सिद्धान्तों में जिन्हें हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिये आधारभूत मानते हैं अभी भी हमारी आस्था है।

५. संसद् के सदस्यगण, समय समय पर हमारे प्रधान मंत्री और चीन के प्रधान मंत्री के बीच पत्रव्यवहार के प्रकाशन द्वारा, आप को, हमारे दोनों देशों के बीच जो स्थिति रही है, उस से अवगत रखा गया है। मेरी सरकार ने यह असन्दिग्ध रूप से स्पष्ट कर दिया है कि इन विवादग्रस्त मामलों को सुलझाने के लिये हम शान्तिपूर्ण प्रयत्न करना चाहते हैं। उतनी ही स्पष्टता से हमने यह भी कहा और दोहराया है कि चीन ने जो रुख अपनाया है और जो एकतरफा कार्य या निर्णय किया है, वह हमें मान्य नहीं होगा। इस लिये मेरी सरकार, उचित शर्तों के साथ और

[राष्ट्रपति]

उचित अवसर पर, शान्ति पूर्ण बातचीत और इसके साथ ही दृढ़ता से देश के प्रतिरक्षा की तैयारी की नीति का अनुसरण कर रही है ।

६. हम आशा करते हैं कि हमारी कार्यवाही और संसार भर का प्रतिकूल जनमत देर सवेर चीन को इस बात के लिये प्रेरित करेगा कि वह संधियों और परम्परा द्वारा स्थापित हमारी सामान्य सीमाओं के सम्बन्ध में हम से समझौता करें । केवल इसी प्रकार अपने महान पड़ोसी के साथ हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध जिनके लिये हमारी सरकार और भारत के लोग आंकाक्षी हैं, यथार्थ हो सकत हैं और दोनों देशों के हित में स्थाई बन सकते हैं । यह आशा की जा सकती है, कि जो कार्यवाही हमने की है और जो नीति हमारी सरकार ने अपनाई है, वह चीन को हमारी नीति और दृढ़ता का विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त होगी ।

७. संसद् के सदस्यो, हमारी सीमा पर जो स्थिति पैदा हो गई है और उस से जो समस्याएं और परिणाम निकलते हैं, उनके सम्बन्ध में मैंने कुछ विस्तार से आपसे कहा है । मेरा यह कहना अनावश्यक है कि मैंने जो कुछ भी बताया वह हमारे देश और लोगों की भावनाओं और अपनी सीमाओं की रक्षा के दृढ़ निश्चय को दोहराना मात्र है । किन्तु रक्षा तभी प्रभावी हो सकती है जब उसके पीछे राष्ट्रीय एकता और दृढ़ता हो । हमारी आर्थिक और औद्योगिक उन्नति, उत्पादन की योजनाओं पर अधिक तेजी और परिश्रम से अमल जिससे कि देश को आधुनिक रक्षा के साधन उपलब्ध हो सकें, और इसके साथ ही राष्ट्र में बल और अनुशासन की भावना का संचार हो सके, ये सब बातें ही देश की सुरक्षा का आधार हैं।

८. चीनी-भारतीय सीमाओं पर घटी घटनायें निःसन्देह दुखपूर्ण हैं, किन्तु हमें ने देश की उन्नति और आर्थिक व्यवस्था के योजनाबद्ध विकास के प्रयत्नों को ढीला नहीं करना चाहिये और न हम ऐसा कर रहे हैं । वास्तव में इन घटनाओं के कारण मेरी सरकार आर्थिक विकास को अधिक गतिमय और व्यवस्थित करने की दिशा में कदम उठा रही है ।

९. तीसरी पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा तैयार करने का काम कुछ और आगे बढ़ा है। इस योजना का क्षेत्र अधिक व्यापक है और इसके लक्ष्य अधिक ऊंचे हैं । तीसरी पंचवर्षीय योजना का ध्येय, १९५०–५१ के मुकाबले में राष्ट्रीय आय को लगभग दो गुना करना और कृषि उत्पादन तथा हमारी खुराक की जरूरतों, भारी मशीनी औजार निर्माण और लोहा, ईंधन तथा बिजली जैसे मौलिक उद्योगों की ओर अधिक ध्यान देना है । छोटी और ग्रामीण दस्तकारियों का और हमारी देहाती आर्थिक व्यवस्था का स्वस्थ और अविलम्ब विकास और औद्योगिक केन्द्रों तथा देहाती लोगों के बीच उचित सम्बन्ध स्थापित करना, ये बातें उस योजना के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं ।

१०. तीसरी पंचवर्षीय योजना हमारे राष्ट्रीय विकास के नाजुक दौर की द्योतक है । इसका ध्येय हमारी आर्थिक व्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाना और इस योग्य करना है कि इस से हमारे उत्पादन के साधन बढ़ सकें और उनका आप से विस्तार हो सके । इसके लिए लोगों से निरंतर प्रयास करते रहने और धैर्य रखने की अपेक्षा की जाती है । इस प्रकार हमारी तीसरी योजना में इस की विकास सम्बन्धी आवश्यकताओं और आगामी चौथी योजना की जरूरतों को सामने रखा गया है । विदेशी सहायता और ऋण के लिये जो हमारे विकास की मौजूदा हालत में जरूरी हैं, हम आभारी हैं, किन्तु अपने ही हित में और अपने अच्छे और उदार मित्रों के हित में और संसार के अर्द्धविकसित क्षेत्रों